भगवान दत्तात्रेय

(अध्यात्मशास्त्रीय विवेचन एवं उपासना)

भूमिका

अधिकांश लोगोंको देवतासे सम्बन्धित जो थोडा ज्ञान रहता है, वह बचपनमें पढी अथवा सुनी कहानियोंद्वारा होता है । इस अल्प ज्ञानके कारण देवतापर विश्वास भी अल्प ही रहता है । देवतासे सम्बन्धित अधिक ज्ञान प्राप्त होनेपर अधिक विश्वास निर्माण होनेमें सहायता मिलती है । विश्वासका रूपान्तर आगे श्रद्धामें होता है, जिससे देवताकी उपासना एवं साधना भी उचित ढंगसे हो पाती है । इस दृष्टिकोणसे इस लघुग्रन्थ में दत्तात्रेय देवतासे सम्बन्धित प्रायः अन्यत्र न पाया जानेवाला उपयुक्त अध्यात्मशास्त्रीय ज्ञान देनेपर विशेष ध्यान दिया है। दत्तात्रेय देवताके विषयमें विस्तृत विवेचन सनातनके ग्रन्थ 'भगवान दत्तात्रेय'में दिया है ।

श्री गुरुचरणोंमें प्रार्थना है कि यह लघुग्रन्थ पढकर प्रत्येक व्यक्तिको अधिकाधिक साधनाकी प्रेरणा मिले । – **संकलनकर्ता**

अनुक्रमणिका

卐 दत्त देवतासे सम्बन्धित विवेचनका महत्त्व ७

卐 भूमिका ८

१. अर्थ २. कुछ नाम ९

३. जन्मका इतिहास ४. दत्तके गुरु एवं उपगुरु ११

५. विशेषताएं ६. कार्य २६

७. परिवारका भावार्थ ८. मूर्तिविज्ञान २८

९. सनातन-निर्मित दत्त भगवानका सात्त्विक 'चित्र' एवं 'नामजप-पट्टियां' ३०

१०. उपासना ४०

११. विकार-निर्मूलन हेतु दत्त भगवानका नामजप एवं दत्त भगवानके मन्त्रजप ! ५५

१२. पितरोंको गति दिलानेवाला नामजप ! ५५

१३. दत्तात्रेय देवताकी उपासनासे अनिष्ट शक्तिकी पीडासे रक्षा होना ५९

卐 **संकलनकर्ताओंका वैज्ञानिक दृष्टिकोण एवं अन्य जानकारी** ६०